IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मनुष्य की मूल संवेदनाएं और उसका नैतिक विकास

डॉ. मधुलता व्यास
सहयोगी प्राध्यापक
रेवाबेन पटेल कॉलेज, भंडारा

जाति (राष्ट्र) भी एक व्यक्ति मनुष्यभाँति है। जिस प्रकार मनुष्य कभी सोता है, कभी जागता है, कभी सोचता–विचारता है, कभी आनंद के तराने छेड़ देता है उसी प्रकार सारी जाति (राष्ट्र) भी अपने जीवन में भिन्न–भिन्न अवस्थाओं से गुजरती है। यदि हमसे कोई पूछे कि भारतीय जाति ने क्या सोचा–विचारा है, उसकी बहुमूल्य चेताराषि क्या क्या है, तो हम उसे इस संपूर्ण साहित्य के उत्तम ग्रंथो का निचोंड़ सुनायेंगे जो वैदिक ऋषि से लेकर प्रेमचंद तक महान विचारकों ने रचा है।[1]

आज हम आधुनिक युग में जी रहे है। आध्यात्मिक उन्नति जरूरी है, वैज्ञानिक उन्नति के पहले क्योंकि आध्यात्मिक मनुष्य अच्छे–बुरे का ख्याल करता है। आध्यात्म उसे विवेक प्रदान करता है। वह व्यक्ति को व्यक्ति की सीमा में रखता है। मनुष्य साधन निर्मित कर सकता है, साधन मनुष्य को नहीं, इसलिये मनुष्य ही सर्वोत्तम कृति है इस प्रकृति की, इस सृष्टि की।

अपनी बौद्धिक संपन्नता का सदुपयोग– मनुष्य के पास ज्ञान होता है लेकिन वह उस ज्ञान का उपयोग किस प्रकार करेगा यह उसके स्वभाव पर निर्भर करता है, इसलिए ज्ञान शस्त्र है और उस शस्त्र को चलाने वाला है मनुष्य, उसके मैं में निहित अन्तर्भावना। इसका उदहारण पौराणिक काव्य रामायण में देखने को मिलता है। रामायण के दो मुख्यपात्र है एक सूर्यवंशी राम और दूसरे चंद्रवंशी रावण। रावण अपनी मूल प्रकृति से हटकर तेजस्विता की ओर अस्वाभाविक ढंग से बढ़ता है और राम सूर्यवंशी होने के बावजूद भी व्यवहार में शीतलता बनाये हुये है वहीं रावण साधन संपन्न होने के कारण अहंकारजनित है और अतिविश्वासी होने के कारण उसे अंत में हार का सामना करना पड़ता है वहीं राम के पास साधनों की कमी थी । राम साधनो के अभाव में अपना मनोबल मजबूत रखते है और मानवीय संवेदनाओं के साथ नैतिक गुणों के बल पर ही सच्ची विजय हासिल करते हैं।

इस बात की पुष्टि कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की कविता ''राम की शक्ति पूजा'' है। इस कविता में, राम एक साधारण मनुष्य की तरह दिखाई देते है और अपने नैतिक बल से ही वे युद्ध जीतते है। राम एक साधारण मनुष्य की तरह जब , संघर्ष करते है जब वे रावण से हार का सामना करते है तब वे सोच में पड़ जाते है, की कैसे इस युद्ध को जीता जाए, उनका लक्ष्य रावण की सोने की लंका को पाना नहीं था बल्कि अपनी प्रिय पत्नी सीता को मुक्त करना था ऐसे समय जामवंत जी राम से कहते है–

''रघुवर विचलित होने का नहीं देखता मैं कारण,

हे पुरुषसिंह तुम भी यह शक्ति करो धारण

आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर

तुम वरो विजय संयत प्राणो से प्राणो पर

रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सकता त्रस्त,

तो निश्चय तुम हो सिद्ध, करोगे उसे ध्वस्त''

इससे स्पष्ट हो जाता है की मनुष्य का नैतिक बल भौतिकतावाद में नहीं, मानवता वादी विचारों में है, सत्य की प्रगाढ़ता में है । हजारी प्रसाद द्विवेदीजी ने लिखा है ''– 'व्यक्ति का आत्मबल उसकी जडपूजा से अवरूद्ध हो जाता है। जिसके पास ये जडबंधन जितने कम होते है वह सत्यपरायण हो जाता है ।''

हमारे भारत का घोषवाक्य है ''सत्यमेव जयते''। सत्य सौ परदों में भी नहीं छुपता और अंततः सत्य की ही जीत होती है। आज किसी भी राष्ट्र को मानसिक संकीर्णता से ऊपर उठकर मानवजाति के कल्याण के लिए कार्य करना ही श्रेयस्कर होगा होगा। तुलसीदास द्वारा रचित रामचरित मानस में भी कहा गया है, 'परहित सरिस धरम नहिं भाई' दूसरों के कल्याण भलाई के लिये जो देश विचार करता है, वह देश नैतिक शिक्षा का विकास करता है।

मनुष्य जाति को ऊपर उठाने के लिए उसका सामूहिक विकास एकता के लिए उसमे संवेदनाओं का विकास जरुरी है बौद्धिकता की दौड़ में आधुनिक जीवनशैली में आज मनुष्य ह्रदयविहीन हो गया है ऐसे में हमें उनमें साहित्य का संचार करना होगा साहित्य जो सबके हित में होता है जिसमे सभी के कल्याण की भावना निहित होती है। कविता कहानी नाटक आत्मजीवनी संस्मरण रेखाचित्र और साहित्य की अन्य विधा के माध्यम से संवेदनाओं को जाग्रत किया जाता है। मनुष्य को जड़ होने से रोका जाता है क्योंकि जो जल बहता रहता है वो शुद्ध होता है।

वास्तव में ''मनोवैज्ञानिकों के अनुसार मानव की मौलिक संवेदनायें मुख्यतः तीन प्रकार की होती है –

1. जीवन की इच्छा
2. प्रत्युत्पति तथा
3. समाजबोध''[2]

जीवन में इच्छा यह मनुष्य की प्रमुख संवेदना है, जिससे दोनों उत्पन्न होते हैं। संपूर्ण जीवन की इच्छा मनुष्य को प्रेम करने तथा अपनी परिस्थितियों का अध्ययन करके उन पर विजय पाने की प्रेरणा देती है। इसलिये मनुष्यमें शक्तिशाली बनने, सौंदर्य निर्मित करने तथा साधन संपन्न बनने की इच्छा हुई। उसके मन में संचारी भाव के रुप में कुतुहल, उत्कंठा, आकांक्षा आदि भावनायें विकसित हुई। प्रत्येक व्यक्ति आत्मसम्मान के साथ जीना चाहता है ।

जान है तो जहान है

आपका मान है तो आप महान है।

संत नरसी मेहता का भजन ''**वैष्णव जन तो तेने कहिए**'' राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी को बहुत पसंद था जिसका भावार्थ यह था की मनुष्य वहीं है जो मनुष्य के दुख को समझे।

वैष्णव जन तो तेने कहिए

जे पीर पराई जाने रे

पर उपकार करे पर कोई

मन अभिमान ना माने रे

आज न पुराण युग है न मध्य युग इसलिए हमें धर्म की संकल्पना मनुष्य को केंद्र में रख कर करनी है । मनुष्य की मूल संवेदना में दो चीजें प्रमुख होती हैं, 'सुख और दुख', पंडित रामचंद्र शुक्ल जी ने चिंतामणि पुस्तक में इस बात पर बहुत सूक्ष्म विवेचन किया है। उदाहरण के लिए, क्रोध का भाव हमें यदि कोई चीज चुभ जाती है तो हम सह लेते हैं लेकिन जब पता चलता है इसे चुभाने वाला कोई और है तो हमें तुरंत क्रोध आ जाता है यही बातें हैं जो दुख से जुड़ी हुई है। गीता में यह कहा गया है कि, **''जो पुरुष संपूर्ण कामनाओं को त्याग कर ममता रहित अहंकार रहित होकर विचरण करता है वही शांति प्राप्त करता है''**[3]

निश्चयात्मक बुद्धि– मनुष्य की भावना जब निर्णय की स्थिति पर पहुंचती है तब उसे आत्मा कहा जाता है। कर्म के पीछे कौन से तत्व होते हैं और मनुष्य भावनाओं से प्रेरित होकर कर्म करने को प्रवृत्त होता है इस बारे में कृष्ण ने गीता में कहां है, ''हे अर्जुन, इस कर्म योग में निश्चयात्मक बुद्धि एक ही होती है, किंतु अस्थिर विचार वाले विवेकहीन मनुष्य भ्रमित होते हैं।''[4]

समाज और मनुष्य का नैतिक विकास– मनुष्य एक सामाजिक इकाई है समाज से मनुष्य और मनुष्य से समाज है, दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं परस्पर एक दूसरे के पूरक हैं समाज हमारा आईना है जिसमें देखकर हम पता कर सकते हैं हम किस स्थिति से गुजर रहे हैं हमारी दशा क्या है क्योंकि हम वही सोचते हैं उसी चिंतन में रहते हैं जिससे समाज गुजर रहा होता है हम समाज की क्रियाकलापों से प्रभावित हुए बिना नहीं रहते इसलिए किसी शायर ने भी कहा है, ''खत का मजमून भाप लेते हैं लिफाफा देखकर'' ठीक उसी तरह हमारे देश की स्थिति का हमसे पता चलता हैं। हमारी राष्ट्रीयता को कहीं कोई धोखा तो नहीं, कहीं राष्ट्रीयता खंडित तो नहीं हो रही, देश में हो रहे उत्थान पतन का असर प्रत्येक व्यक्ति में देखते हैं क्योंकि हम इन्ही बहती हुई भाव धारा में जीते हैं।

इच्छाशक्ति और संवेग – आंतरिक अभिलाषा जीवन का सर्वस्व है वह जिधर बहेगी उधर ही मन, शरीर, कर्तव्य और वातावरण, सहज ही बढ़ता ढलता चला जाएगा इस प्रवाह के आगे कोई अवरोध नहीं ठहरता समस्त प्रतिकूलताओं को चीरता हुआ वह प्रवाह अपने लिए रास्ता बना लेता है, साधनों को प्राप्त कर लेता है स्थानों तक पहुंच जाता है जिन की प्रारंभिक स्थिति मैं कल्पना भी करना कठिन था मानसिक स्वास्थ्य क्या है, एक संवेग, हमें जीवन की समस्याओं से निबटने की योग्यता सही वास्तविक निर्णय लेने की क्षमता, दूरदर्शी होना प्रसन्नता पूर्वक कार्य करने की क्षमता यह सारी बातें मानसिक स्वास्थ्य का कारण है।[5]

स्वसूचन अर्थात ऑटो सजेशन – ''परिवर्तन की तीव्र भावना मन में उठनी चाहिए आधे अधूरे मन से लिए गए संकल्प दुष्प्रभावित हो जाते हैं अतः आवश्यकता की तीव्रता जितनी अधिक होगी उतनी ही परिलक्षित होगी।''[6]

निष्कर्ष : आज समाज की विपरीत परिस्थितियों में सुधार लाने के लिए हमें अपने में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करना होगा । मनुष्य के आतंरिक गुणों का विकास ही उसके बाहरी विकास का आधार है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. साहित्य सहचर – हजारीप्रसाद द्विवेदी – पृष्ठ संख्या 18– प्रकाशक नैवेद्य निकेतन
2. चेतन अचेतन सुपर चेतन– लेखक पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य – पृष्ठ संख्या 1.19
3. श्रीमदभगवतगीता सांख्य योग का द्वितीय अध्याय पृष्ठ 71
4. श्रीमदभगवतगीता ब्रह्मविद्याम योगशास्त्र श्री कृष्ण अर्जुन संवाद सांख्य योग द्वितीय अध्याय
5. भारतीय मानसशास्त्र– लेखक सुरेंद्र प्रताप सिंह– पृष्ठ नंबर 268 –प्रकाशक हिमालय पब्लिकेशन हाउस नागपुर 440018
6. भारतीय मानसशास्त्र– लेखक सुरेंद्र प्रताप सिंह– पृष्ठ नंबर 141– प्रकाशक हिमालय पब्लिकेशन हाउस नागपुर 440018